सूरह — एक कहानी

सूरह अल-अन्फ़ाल

माल-ए-ग़नीमत

पूरा सफ़र — फ़ैसले का दिन —

जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 8 • 75 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

इन्नमल्-मुअ्मिनूनल्-लज़ीन इज़ा ज़ुकिरल्-लाहु वजिलत क़ुलूबुहुम
2. मोमिन तो सिर्फ़ वो हैं कि जब अल्लाह का ज़िक्र हो तो उनके दिल काँप उठें।

व मा ज'अलहुल्-लाहु इल्ला बुश्रा व लि-तत्मइन्न बिही क़ुलूबुकुम
10. और अल्लाह ने इसे सिर्फ़ ख़ुशख़बरी बनाया और ताकि तुम्हारे दिल इस से मुतमइन हो जाएँ।

व मा रमैत इज़ रमैत व लाकिन्नल्-लाह रमा
17. और जब तुमने फेंका तो तुमने नहीं फेंका, बल्कि अल्लाह ने फेंका।

व ला तनाज़'ऊ फ़-तफ़्शलू व तज़्हब रीहुकुम वस्बिरू
46. और आपस में झगड़ा मत करो वरना हिम्मत हार जाओगे और तुम्हारी हवा निकल जाएगी। और सब्र करो।

लौ अन्फ़क़्त मा फ़िल्-अर्ज़ि जमी'अम्-मा अल्लफ़्त बैन क़ुलूबिहिम
63. अगर तुम ज़मीन की सारी चीज़ें ख़र्च कर देते तो भी उनके दिलों को न जोड़ पाते।

व इन जनहू लिस्-सल्मि फ़ज्नह लहा व तवक्कल 'अलल्-लाह
61. और अगर वो सुलह की तरफ़ झुकें तो तुम भी उस की तरफ़ झुक जाओ और अल्लाह पर भरोसा करो।

माल-ए-ग़नीमत का एक सवाल

बेटा, ये सूरह बद्र की जंग के बाद नाज़िल हुई — पहला बड़ा मुक़ाबला, हिजरत के दूसरे साल, जब तक़रीबन तीन सौ तेरह कम-सामान मुसलमानों का सामना तक़रीबन एक हज़ार पूरे हथियार-बंद आदमियों से हुआ।

और ग़ौर कीजिए ये सूरह कैसे खुलती है: **जश्न से नहीं, बल्कि फ़तह पाने वालों के दरमियान एक इख़्तिलाफ़ से।**

'यस्अलूनक 'अनिल्-अन्फ़ाल — वो तुम से माल-ए-ग़नीमत के बारे में पूछते हैं — क़ुलिल्-अन्फ़ालु लिल्लाहि वर्-रसूल — कहो: ग़नीमत अल्लाह और रसूल की

है — फ़त्तक़ुल्-लाह व अस्लिहू ज़ात बैनिकुम — तो अल्लाह से डरो और अपने आपस के ताल्लुक़ात दुरुस्त करो — व अती'उल्-लाह व रसूलहू इन कुन्तुम मुअ्मिनीन — और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो, अगर तुम मोमिन हो।'

बेटा, इसे देखिए। **फ़तह ग़ैर-मामूली थी, और चंद घंटों के अंदर तक़सीम पर इख़्तिलाफ़ हो गया।** और अल्लाह का जवाब झगड़े को जड़ से ख़त्म कर देता है: **ये तुम्हारा है ही नहीं कि तुम इस पर झगड़ो।** और फिर: 'अस्लिहू ज़ात बैनिकुम' — **अपने दरमियान जो है उसे दुरुस्त करो।**

बेटा, वो जुमला सँभाल कर रखने लायक़ है। **मोमिनीन के दरमियान जायदाद, विरासत या कारोबार के किसी भी झगड़े में, पहला हुक्म 'तय करो कौन सही है' नहीं — बल्कि ताल्लुक़ की मरम्मत करो।**

और फिर, बेटा, चार सिफ़तों में एक मोमिन की ता'रीफ़ आती है:

'इन्नमल्-मुअ्मिनूनल्-लज़ीन इज़ा ज़ुकिरल्-लाहु वजिलत क़ुलूबुहुम — मोमिन तो सिर्फ़ वो हैं कि जब अल्लाह का ज़िक्र हो तो उनके दिल काँप उठें — व इज़ा तुलियत 'अलैहिम आयातुहू ज़ादत्हुम ईमाना — और जब उन पर उसकी आयतें पढ़ी जाएँ तो वो उनके ईमान को बढ़ा दें — व 'अला रब्बिहिम यतवक्कलून — और वो अपने रब ही पर भरोसा करते हैं — अल्लज़ीन युक़ीमूनस्-सलात व मिम्मा रज़क़्नाहुम युन्फ़िक़ून — जो नमाज़ क़ायम करते हैं और जो हमने उन्हें दिया उस में से ख़र्च करते हैं।'

बेटा, पहली निशानी ग़ौर कीजिए: **अल्लाह का नाम लिए जाने पर दिल हरकत करता है। ज़ुबान नहीं — दिल।**

और दूसरी: **क़ुरआन उनके ईमान को बढ़ाता है।** बेटा, ये एक कसौटी है जो आप अपने आप पर लगा सकते हैं। **इस किताब के साथ एक नशिस्त के बाद, क्या आप में कोई चीज़ पहले से बुलंद हुई?**

'उलाइक हुमुल्-मुअ्मिनून हक़्क़ा — यही सचे मोमिन हैं — लहुम दरजातुन 'इन्द रब्बिहिम व मग़्फ़िरतुंव्-व रिज़्क़ुन करीम — उन के लिए उनके रब के पास दर्जे हैं,

और मग़्फ़िरत और इज़्ज़त वाला रिज़्क़।'

गोया वो मौत की तरफ़ हाँके जा रहे हों

फिर सूरह याद करती है कि जंग अस्ल में कैसे शुरू हुई, बेटा — और ये इस बारे में ईमानदार है कि मोमिनीन ने कैसा महसूस किया।

'**कमा अख़्रजक रब्बुक मिम्-बैतिक बिल्-हक़्क़ि व इन्न फ़रीक़म्-मिनल्-मुअ्मिनीन ल-कारिहून** — जैसे तुम्हारे रब ने तुम्हें तुम्हारे घर से हक़ के साथ निकाला, **जब कि मोमिनीन का एक गिरोह ना-पसंद कर रहा था** — **युजादिलूनक फ़िल्-हक़्क़ि ब'अ्दमा तबय्यन** — वो तुम से हक़ के बारे में बहस कर रहे थे उस के वाज़ेह हो जाने के बाद — **क-अन्नमा युसाक़ून इलल्-मौति व हुम यन्ज़ुरून** — **गोया वो मौत की तरफ़ हाँके जा रहे हों और देख रहे हों।**'

बेटा, क़ुरआन इसे छुपाता नहीं। वो मदीना से एक तिजारती क़ाफ़िले को रोकने की उम्मीद ले कर निकले थे, और उन्हें एक लश्कर मिल गया। और उन में से कुछ शिद्दत से हिचकिचा रहे थे, और इस पर बहस की, और उन्हें लगा कि वो अपनी ही मौत में चल रहे हैं।

बेटा, इस ईमानदारी से तसल्ली लीजिए। **ये सहाबा थे — बेहतरीन नस्ल — और उन्होंने ख़ौफ़ और हिचकिचाहट महसूस की। ईमान उन जज़्बात का न होना नहीं; ईमान वो है जो आप उन जज़्बात के साथ करते हैं।**

'**व इज़ य'इदुकुमुल्-लाहु इह्दत्-ताइफ़तैनि अन्नहा लकुम व तवद्दून अन्न ग़ैर ज़ातिश्-शौकति तकूनु लकुम** — और जब अल्लाह ने तुम से दो गिरोहों में से एक का वादा किया कि वो तुम्हारा होगा, **और तुम चाहते थे कि जो बे-हथियार है वही तुम्हारा हो** — **व युरीदुल्-लाहु अंय्युहिक़्क़ल्-हक़्क़ बि-कलिमातिह** — **मगर अल्लाह चाहते थे कि अपने कलिमात से हक़ को साबित करें।**'

बेटा, इसे ग़ौर से देखिए, क्योंकि ये दुआ और ख़्वाहिश के बारे में एक सबक़ है। **वो आसान रास्ता चाहते थे — बे-हथियार क़ाफ़िला, बिना लड़ाई के मुनाफ़ा। और अल्लाह ने उन्हें मुश्किल वाला दिया, क्योंकि मुश्किल वाले ने ही हक़ क़ायम किया**

और तारीख़ बदल दी।

बेटा, **जिस चीज़ से आप बचना चाहते हैं, शायद वही चीज़ आपको बनाएगी।**

और फिर मदद आई। पहले, नींद: '**इज़ युग़श्शीकुमुन्-नु'आस अमनतम्-मिन्ह** — जब उसने तुम पर **ऊँघ** डाल दी, अपनी तरफ़ से **अमन** के तौर पर।' बेटा, एक ऐसी जंग से पहली रात जिसे वो जीत नहीं सकते थे, **अल्लाह ने उन्हें सुला दिया।** क्या रहमत — आराम, ठीक उस वक़्त जब ख़ौफ़ को सब की नींद उड़ा देनी चाहिए थी।

'**व युनज़्ज़िलु 'अलैकुम मिनस्-समा-इ मा-अल्-लि-युतह्हिरकुम बिही व युज़्हिब 'अन्कुम रिज्ज़श्-शैतानि व लि-यर्बित 'अला क़ुलूबिकुम व युसब्बित बिहिल्-अक़्दाम** — और उसने तुम पर आसमान से पानी उतारा ताकि तुम्हें **पाक** करे, और तुम से शैतान की वसवसा-अंदोज़ी दूर करे, **और तुम्हारे दिलों को बाँधे, और तुम्हारे क़दम जमा दे।**'

बेटा, देखिए एक बारिश ने कितने काम किए: पीने और नहाने का पानी, उनके पाँव के नीचे रेत जम गई, गर्द बैठ गई, दिल बँध गए, और दुश्मन की ज़मीन कीचड़ बन गई। **एक फ़ैसला, कई मक़्सद एक साथ।** बेटा, **उनकी मदद आम तौर पर यूँ ही आती है — किसी मामूली चीज़ के ज़रिए जो एक ही वक़्त में कई काम कर देती है।**

और फ़रिश्ते भेजे गए — '**अन्नी मुमिद्दुकुम बि-अल्फ़िम्-मिनल्-मलाइकति मुर्दिफ़ीन** — मैं तुम्हें एक हज़ार फ़रिश्तों से मदद दूँगा, जो एक दूसरे के पीछे आएँगे।'

'**व मा ज'अलहुल्-लाहु इल्ला बुश्रा व लि-तत्मइन्न बिही क़ुलूबुकुम — और अल्लाह ने इसे सिर्फ़ ख़ुशख़बरी बनाया, और ताकि तुम्हारे दिल इस से मुतमइन हो जाएँ — व मन्-नस्रु इल्ला मिन 'इन्दिल्-लाह — और मदद सिर्फ़ अल्लाह ही की तरफ़ से है।**'

बेटा, वो आख़िरी लाइन पूरी सूरह की कुंजी है: **फ़रिश्ते तक सबब न थे। वो एक तसल्ली थे। फ़तह सिर्फ़ अल्लाह की तरफ़ से आई।**

तुमने नहीं फेंका

और अब, बेटा, वो आयत जो इस सूरह का दिल है — और अपनी कामयाबियों के बारे में सोचने के तरीक़े पर क़ुरआन की सब से सबक़-आमोज़ आयतों में से एक।

जंग के दौरान नबी ﷺ ने एक मुट्ठी मिट्टी और कंकरियाँ उठाईं और दुश्मन की तरफ़ फेंकीं, और वो अल्फ़ाज़ कहे जो रिवायात में महफ़ूज़ हैं। और अल्लाह ने नाज़िल किया:

'**फ़-लम तक़्तुलूहुम व लाकिन्नल्-लाह क़तलहुम — तो तुमने उन्हें क़त्ल नहीं किया, बल्कि अल्लाह ने उन्हें क़त्ल किया — व मा रमैत इज़ रमैत व लाकिन्नल्-लाह रमा — और जब तुमने फेंका तो तुमने नहीं फेंका, बल्कि अल्लाह ने फेंका — व लि-युब्लियल्-मुअ्मिनीन मिन्हु बला-अन हसना** — और ताकि वो मोमिनीन को एक अच्छी आज़माइश से आज़माएँ।'

बेटा, उस दरमियानी जुमले को धीरे पढ़िए: '**व मा रमैत इज़ रमैत**' — **तुमने नहीं फेंका जब तुमने फेंका।**

बेटा, अरबी दोनों बातों की एक साथ तस्दीक़ करती है। **उन्होंने फेंका ज़रूर** — आयत कहती है 'जब तुमने फेंका'। उनका बाज़ू हिला, उनकी मुट्ठी खुली, मिट्टी उनकी उँगलियों से निकली। **अमल अस्ली था और उन्हीं का था।**

और उसी वक़्त: **उन्होंने नहीं फेंका।** क्योंकि एक मुट्ठी रेत ने अस्ल में **जो किया** — एक पूरे लश्कर की हर आँख तक पहुँचना — **वो उन की तरफ़ से था ही नहीं।**

बेटा, कोशिश और भरोसे के बारे में ये क़ुरआन का सब से बारीक बयान है। **आपको अमल करना होगा। अमल अस्ली और आपका अपना होना चाहिए। और नतीजा कभी आपका न था।**

इसे अपनी ज़िंदगी पर लगाइए, बेटा। **आपने पढ़ा — मगर समझ अता की गई। आपने मेहनत की — मगर रिज़्क़ मुक़द्दर था। आपने किसी से दीन के बारे में बात की — मगर उस दिल का नरम होना आपके अल्फ़ाज़ से न था। आपने अपने बच्चों की अच्छी तर्बियत की — मगर उनकी हिदायत आपके हाथ में नहीं।**

'व मा रमैत इज़ रमैत।' **मुट्ठी फेंकिए। और जानिए कि उसे ले कर कौन जाता है।**

झगड़ा मत करो, वरना तुम्हारी हवा निकल जाएगी

फिर सूरह मोमिनीन को हर मुक़ाबले के लिए हिदायात देती है, बेटा, और ये मैदान-ए-जंग से कहीं आगे तक लागू होती हैं:

'या अय्युहल्-लज़ीन आमनू इज़ा लक़ीतुम फ़ि-अतन फ़स्बुतू वज़्कुरुल्-लाह कसीरल्-ल'अल्लकुम तुफ़्लिहून — ऐ ईमान वालो, जब तुम किसी गिरोह से सामना करो तो जमे रहो और अल्लाह को बहुत याद करो, ताकि तुम कामयाब हो।'

बेटा, मुश्किल के लम्हे के लिए दी गई दो हिदायात ग़ौर कीजिए: **जमे रहो, और अल्लाह को कसरत से याद करो। ज़िक्र सब से सख़्त लम्हे के बीच में — बाद में नहीं।**

और फिर, बेटा, वो आयत जो समझाती है कि जमाअतें क्यों नाकाम होती हैं:

'व अती'उल्-लाह व रसूलहू व ला तनाज़'ऊ फ़-तफ़्शलू व तज़्हब रीहुकुम — और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो, और आपस में झगड़ा मत करो, वरना तुम हिम्मत हार जाओगे और तुम्हारी ताक़त चली जाएगी — वस्बिरू इन्नल्-लाह म'अस्-साबिरीन — और सब्र करो; बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ हैं।'

बेटा, 'व तज़्हब **रीहुकुम**' — लफ़्ज़ी तौर पर, **तुम्हारी हवा निकल जाएगी।** क्या जुमला है। अरब 'रीह' उस ज़ोर और रफ़्तार के लिए इस्तेमाल करते थे जो एक गिरोह को आगे ले जाती है, **जैसे बादबान में हवा।**

तो आयत कह रही है: **अंदरूनी झगड़े सिर्फ़ इख़्तिलाफ़ पैदा नहीं करते — वो आप में से हवा निकाल लेते हैं।** एक जमाअत के पास गिनती, वसाइल और हक़ पर होना सब हो सकता है, और फिर भी वो ठहरी रह सकती है, कहीं न जाते हुए, क्योंकि उसके लोग आपस में लड़ रहे हैं।

बेटा, आज उम्मत को देखिए और इस आयत को देखिए। **इसकी तशख़ीस चौदह सदी पहले हो चुकी थी।**

और फिर ग़ुरूर के बारे में एक तंबीह: '**व ला तकूनू कल्-लज़ीन ख़रजू मिन दियारिहिम बतरंव्-व रिआ-अन्-नास** — और उन लोगों जैसे मत बनो जो अपने घरों से **अकड़ते** हुए और **लोगों को दिखाने** के लिए निकले।'

बेटा, मक्की लश्कर गाने-बजाने और नुमाइश के साथ निकला था। और आयत मोमिनीन को ख़बरदार करती है कि वो ऐसा न बन जाएँ।

और ये उस लम्हे से ख़बरदार करती है जब शैतान उन को छोड़ देता है जिन्हें उसने उकसाया था: **'फ़-लम्मा तरा-अतिल्-फ़ि-अतानि नकस 'अला 'अक़िबैहि व क़ाल इन्नी बरी-उम्-मिन्कुम** — और जब दोनों लश्करों ने **एक दूसरे को देखा**, वो अपनी एड़ियों पर पलटा और बोला: **मैं तुम से बरी हूँ — इन्नी अरा मा ला तरौन — बेशक, मैं वो देखता हूँ जो तुम नहीं देखते।'**

बेटा, यही हर बुरे साथी का अंदाज़ है: **ऊँची आवाज़ में हौसला-अफ़ज़ाई जब तक नतायज सामने न आएँ, और फिर ग़ायब।**

नेमतें बे-वजह नहीं जातीं

फिर सूरह तारीख़ का एक क़ानून बयान करती है, बेटा — और ये उस आयत की साथी है जो हमने सूरह अर-र'अद में पढ़ी:

'ज़ालिक बि-अन्नल्-लाह लम यकु मुग़य्यिरन नि'अ्मतन अन्'अमहा 'अला क़ौमिन हत्ता युग़य्यिरू मा बि-अन्फ़ुसिहिम — ये इस लिए कि अल्लाह किसी क़ौम पर की हुई नेमत को नहीं बदलते जब तक वो वो न बदलें जो उनके अपने अंदर है।'

बेटा, यहाँ सिम्त ग़ौर कीजिए: **ये आयत ख़ास तौर पर एक नेमत के उठ जाने के बारे में है।** और शर्त वही है — पहले अंदर कुछ बदला।

बेटा, तो जब एक ख़ानदान अपनी हम-आहंगी खो दे, या एक जमाअत अपना मुक़ाम, या एक शख़्स वो नेमत जो उसके पास बरसों थी — **ये आयत जो सवाल पूछती है वो ये नहीं कि 'बाहर क्या बिगड़ा?' ये है: उस से पहले यहाँ अंदर क्या बदला?**

और फिर, बेटा, अज़ाब से दो हिफ़ाज़तें जो हर मुसलमान को मालूम होनी चाहिए:

'व मा कानल्-लाहु लि-यु'अज़्ज़िबहुम व अन्त फ़ीहिम — और अल्लाह उन्हें अज़ाब देने वाले न थे जब तक तुम उन में मौजूद हो — व मा कानल्-लाहु मु'अज़्ज़िबहुम व हुम यस्तग़्फ़िरून — और अल्लाह उन्हें अज़ाब देने वाले न थे जब तक वो माफ़ी

माँग रहे हों।'

बेटा, दो ढालों का नाम लिया गया। पहली नबी ﷺ की उन के दरमियान मौजूदगी थी — और वो गुज़र चुकी।

दूसरी आज भी हमारे पास मौजूद है, हर एक दिन: इस्तिग़फ़ार।

बेटा, समझिए ये आयत आपको क्या बता रही है। **वो जमाअत जो 'अस्तग़्फ़िरुल्लाह' कहती रहती है एक हिफ़ाज़त में है। इस लिए नहीं कि उसके गुनाह छोटे हैं, बल्कि इस लिए कि ख़ुद माफ़ी माँगना उस चीज़ को रोक लेता है जो वरना गिर पड़ती।**

बेटा, ये बेहद अमली इल्म है। जब आपको लगे कि चीज़ें बिगड़ रही हैं — आपके घर में, आपके काम में, आपके मुल्क में — **ये आयत आपको वो जवाब बताती है जो हमेशा पहुँच में है।**

अगर वो सुलह की तरफ़ झुकें

फिर सूरह तैयारी और मुआहिदों पर बात करती है, बेटा, और ऐसी हिदायात देती है जो इस दीन का अस्ली तवाज़ुन दिखाती हैं।

'व अ'इद्दू लहुम मस्तत'अ्तुम मिन क़ुव्वतिंव्-व मिर्-रिबातिल्-ख़ैलि तुर्हिबून बिही 'अदुव्वल्-लाहि व 'अदुव्वकुम — और उन के मुक़ाबले में जितनी ताक़त और बँधे हुए घोड़े तुम से हो सके तैयार रखो, जिस से तुम अल्लाह के दुश्मन और अपने दुश्मन को ख़ौफ़ज़दा कर सको।'

बेटा, बयान किया गया मक़्सद ग़ौर कीजिए: '**तुर्हिबून**' — **रोकना**, ख़ौफ़ पैदा करना। **ताक़त का हुक्म इस लिए है कि हमला करने वाला दो बार सोचे। एक कमज़ोर जमाअत हमले को दावत देती है; एक मज़बूत जमाअत को छोड़ दिया जाता है। यही इस की हिकमत है।**

और फिर फ़ौरन, बेटा — और ये तरतीब मायने रखती है:

'व इन जनहू लिस्-सल्मि फ़ज्नह लहा व तवक्कल 'अलल्-लाह — और अगर वो सुलह की तरफ़ झुकें, तो तुम भी उस की तरफ़ झुक जाओ, और अल्लाह पर भरोसा

करो — **इन्नहू हुवस्-समी'उल्-'अलीम** — बेशक, वही सुनने वाले, जानने वाले हैं।'

बेटा, तरतीब देखिए: **इतने मज़बूत बनो कि कोई हमला न करे — और जिस लम्हे दूसरी तरफ़ सुलह की तरफ़ झुके, उस के साथ झुक जाओ।** फ़ौरन, बिना शर्तों के, बिना मज़बूती के मुक़ाम से फ़ायदा माँगे।

'**व इंय्युरीदू अंय्यख़्दू'ऊक फ़-इन्न हस्बकल्-लाह** — और अगर वो तुम्हें धोका देना चाहें, तो तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी हैं।'

बेटा, और यहाँ उस ज़ाहिरी फ़िक्र का जवाब है: **अगर उनकी सुलह की पेश-कश एक चाल हो तो? और अल्लाह कहते हैं: फिर भी सुलह कर लो; मैं तुम्हारे लिए काफ़ी हूँ।**

बेटा, यही वो दीन है जिस पर जंग से मोहब्बत का इल्ज़ाम लगता है। **हुक्म ये है: इतनी तैयारी रखो कि कोई हमला न करे, और जिस लम्हे सुलह पेश हो उसे क़ुबूल कर लो — और ख़तरा अल्लाह के सुपुर्द कर दो।**

वो दिल जिन्हें तुम न जोड़ पाते

और अब, बेटा, भाई-चारे के बारे में क़ुरआन की सब से ख़ूबसूरत आयतों में से एक।

'**हुवल्-लज़ी अय्यदक बि-नस्रिही व बिल्-मुअ्मिनीन** — **वही है जिसने अपनी मदद से और मोमिनीन से तुम्हारी ताईद की** — **व अल्लफ़ बैन क़ुलूबिहिम** — **और उनके दिलों को आपस में जोड़ दिया।**'

'**लौ अन्फ़क़्त मा फ़िल्-अर्ज़ि जमी'अम्-मा अल्लफ़्त बैन क़ुलूबिहिम** — **अगर तुम ज़मीन की सारी चीज़ें ख़र्च कर देते तो भी उनके दिलों को न जोड़ पाते** — **व लाकिन्नल्-लाह अल्लफ़ बैनहुम** — **मगर अल्लाह ने उन्हें जोड़ दिया** — **इन्नहू 'अज़ीज़ुन हकीम** — बेशक, वो ग़ालिब, हिकमत वाले हैं।'

बेटा, समझिए ये आयत किस बारे में है। **औस और ख़ज़रज — मदीना के दो बड़े क़बीले — नस्लों से एक दूसरे से लड़ रहे थे।** ख़ून के बदले, इंतेक़ाम के क़त्ल, ऐसी जंगें जो इतनी लंबी चली थीं कि किसी को याद ही न था वो शुरू कैसे हुईं।

और चंद साल के अंदर, **वो एक ही सफ़ में कंधे से कंधा मिला कर बैठे थे, एक दूसरे**

को भाई कह रहे थे, और मुहाजिरीन को अपने घर और माल दे रहे थे।

और अल्लाह कहते हैं: **अगर तुम ज़मीन की हर चीज़ ख़र्च कर देते, तो ये न कर पाते।**

बेटा, इस के साथ बैठिए, क्योंकि ये आपको दिलों के बारे में कुछ बताता है। **आप उल्फ़त ख़रीद नहीं सकते। आप उसका सौदा नहीं कर सकते, उसे बना नहीं सकते, ना उस पर मजबूर कर सकते हैं। पैसा उसे पैदा नहीं कर सकता, और न दलील।**

बेटा, तो अगर आपके घर में सर्दी है, या किसी भाई-बहन या दोस्त के साथ ताल्लुक़ टूटा हुआ है, **ये आयत आपको बताती है कि हल अस्ल में कहाँ है।** आप सब कुछ ठीक कर सकते हैं और फिर भी दिल न पिघलें — क्योंकि 'अल्लफ़ बैनहुम' अल्लाह का काम है।

तो उन से माँगिए। उन से माँगिए कि वो आपका दिल आपकी बीवी के, आपके वालिदैन के, आपके बच्चों के दिल से जोड़ दें। वो जोड़ना वो करते हैं।

और सूरह की आख़िरी आयतें उस रिश्ते का बयान करती हैं जो इस से बना: '**इन्नल्-लज़ीन आमनू व हाजरू व जाहदू बि-अम्वालिहिम व अन्फ़ुसिहिम फ़ी सबीलिल्-लाहि वल्-लज़ीन आवौ व नसरू उलाइक ब'अ्ज़ुहुम औलिया-उ ब'अ्ज़** — जो ईमान लाए और हिजरत की और अपने मालों और जानों से कोशिश की, **और वो जिन्होंने पनाह दी और मदद की — वो एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं।**'

बेटा, दो गिरोह ग़ौर कीजिए: **वो जिन्होंने सब कुछ छोड़ा, और वो जिन्होंने अपने घर खोले। दोनों का नाम लिया गया, और कोई दूसरे से ऊपर नहीं।**

'**वल्-लज़ीन कफ़रू ब'अ्ज़ुहुम औलिया-उ ब'अ्ज़** — और जिन्होंने कुफ़्र किया वो एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं — **इल्ला तफ़्'अलूहु तकुन फ़ित्नतुन फ़िल्-अर्ज़ि व फ़सादुन कबीर — अगर तुम ऐसा न करोगे (कि एक दूसरे का साथ दो), तो ज़मीन में फ़ित्ना और बड़ा फ़साद होगा।**'

बेटा, ये हर सदी में इस उम्मत के लिए एक तंबीह है: **अगर मोमिनीन एक दूसरे के साथ खड़े न हों, तो नतीजा 'फ़ित्नतुन फ़िल्-अर्ज़' है — पूरी ज़मीन पर बे-चैनी। हमारी ना-इत्तेफ़ाक़ी कोई निजी कोताही नहीं; इसके नतायज सब पर पड़ते हैं।**

और सूरह ख़त्म होती है: **'व उलुल्-अर्हामि ब'अ्ज़ुहुम औला बि-ब'अ्ज़िन फ़ी किताबिल्-लाह — और रिश्तेदार अल्लाह की किताब में एक दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं — इन्नल्-लाह बि-कुल्लि शै-इन 'अलीम** — बेशक, अल्लाह हर चीज़ को जानने वाले हैं।'

बेटा, और देखिए ये सूरह कहाँ से कहाँ पहुँची। **ये उन लोगों से शुरू हुई जो माल-ए-ग़नीमत पर झगड़ रहे थे, और ख़त्म होती है रिश्तेदारी के बंधन और मोमिनीन के भाई-चारे पर। ये 'अपने दरमियान जो है उसे दुरुस्त करो' से शुरू हुई, और उन दिलों पर बंद होती है जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई जोड़ ही न सकता था।**

बेटा, यही बद्र की अस्ली फ़तह है। **माल नहीं। दिल।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. सब से बड़ी फ़तह के बाद एक झगड़ा आया — और पहला हुक्म 'अपने दरमियान जो है उसे दुरुस्त करो' था, 'तय करो कौन सही है' नहीं।

2. एक मोमिन का दिल अल्लाह का ज़िक्र सुन कर हरकत करता है, और क़ुरआन उसे उस से बुलंद छोड़ता है जहाँ उसे पाया।

3. वो आसान रास्ता चाहते थे; अल्लाह ने मुश्किल वाला दिया — और उसी ने उन्हें बनाया।

4. 'तुमने नहीं फेंका जब तुमने फेंका' — अमल वाक़ई तुम्हारा है, नतीजा कभी तुम्हारा न था।

5. अंदरूनी झगड़े एक जमाअत की हवा निकाल देते हैं — गिनती और वसाइल उसकी जगह नहीं ले सकते।

6. इस्तिग़्फ़ार एक क़ायम हिफ़ाज़त है: 'अल्लाह उन्हें अज़ाब देने वाले न थे जब तक वो माफ़ी माँग रहे हों।'

7. इतने मज़बूत बनो कि कोई हमला न करे, और जिस लम्हे सुलह पेश हो झुक जाओ — और अल्लाह से दिलों का जोड़ना माँगो, क्योंकि ज़मीन भर की दौलत ये

नहीं कर सकती।

या अल्लाह, हमारे दिल वैसे जोड़ दीजिए जैसे आपने उनके जोड़े, हमें झगड़ों से बचाइए, और हमारे इस्तिग़्फ़ार को हमारी ढाल बना दीजिए। आमीन।